

कहाँ लाल मेरा प्यारा कहाँ है ?  
 मेरे सूने घर का सहारा कहाँ है ?  
 निरखि जाँके मुख को जीती रही हूँ  
 नयनों की मानो ज्योती लही हूँ  
 वही राम नयनों का तारा कहाँ है ॥  
 सदां जिसको अपने गले से लगाकर  
 उन्मति हो जाती थी आनंद पाकर  
 निर्धन का धन वह दुलारा कहाँ है ॥  
 मधुर वचन जिसके सुधा सम सरस है  
 चन्दन से भी ठण्डा अंगो का परस है  
 हीरों की हंसी का दाता कहाँ है ॥  
 मां मां की बोली जब भी बोलता है  
 मेरी खुशियों की निधी खोलता है  
 मेरे उर मन्दिर का उज्यारा कहाँ है ॥  
 नीले बादल ज्यां जाँका रूप सुन्दर  
 छोटी वयस में भी शुभ गुणों का मन्दिर

मेरे हर्ष आनंद की धार कहां है॥

जिसके जन्म से भई मैं सभागी

सोई हुई मेरी तकदीर जागी

मेरे भाग्य सुख का भण्डारा कहां है ॥

जहां भी मेरा लाल पद पद्म धारे

वहां होती कोटिन रस की बहारें

वह आंखों का अद्भुत निज़ारा कहां है ॥

जांके वदन पर कोटि काम वारूं

अघाए न आंखें युगों तक निहारूं

वह सब का हितैषी आधार कहां है ॥

जिसे देख सब के सुखी प्राण होते

सदां हर्ष आनन्द के बीज बोते

वह मैगसि का जीय जियारा कहां है ॥

आये आनन्द कंद करूणा सागर सुख भवन

जंह तंह भए आनंद निरखि निरखि शशि वदन को ॥